Dr. Nutissri Dubey
Assistant Professor
Dept. of Philosophy
H.D. Jain College, Ara

U.G. IV
MJC – 05 : 'Western Philosophy'
Spinoza – Geometrical Method

स्पिनोजा की 'ज्यामिति विधि'

स्पिनोजा ने दर्शन के क्षेत्र में ज्यामितीय विधि (Geometrical Method) का प्रयोग करके दर्शन को एक निश्चित आधार पर प्रतिष्ठित करने का प्रयास किया है। ज्यामिति के निष्कर्ष अनिवार्य एवं निश्चयात्मक होते हैं। स्पिनोजा ने ज्यामिति विधि को अपनाकर दर्शन में निश्चयात्मकता एवं प्रामाणिकता लाने का प्रयास किया है।

ज्यामिति एक असीम देश (Infinite Space) को मानकर चलता है। देश होगा तभी उसमें रेखाओं की स्थिति संभव होगी और रेखाएँ होंगी तभी आकृतियाँ बनेंगी, धरातल बनेंगे। रेखाएँ आकृतियाँ सभी देश पर आश्रित हैं। इसी प्रकार, स्पिनोजा अपने दर्शन में एक पदार्थ

(Substance) को मानकर चलते हैं। इसी पदार्थ से गुण (attributes) और गुण से विकार (modes) उत्पन्न होते हैं। जिस प्रकार से सागर से अनेक लहरें निकलती हैं उसी प्रकार से एक पदार्थ से अनेकता का विश्व निःसृत होता है। अनेकता का मूल शुद्ध सत्तात्मक पदार्थ ही है। यही कारण है कि पदार्थ को स्पिनोजा कभी प्रकृति और कभी ईश्वर कहते हैं। अनेकता का विश्व पदार्थ पर उसी तरह अवलंबित है जिस तरह सेब पर उसकी लाली।

ज्यामिति में शुद्ध देश की प्राप्ति के लिए रेखाओं, आकृतियों, धरातलों का निषेध किया जाता है। इन सबके निषेध से जो शेष रह जाता है, वह विशुद्ध देश (Pure space) है। इन रेखाओं, आकृतियों के रहने से देश सीमित हो जाता है। एक रेखा दूसरी रेखा को, एक आकृति दूसरी आकृति को सीमित करती है। यही बात स्पिनोजा के दर्शन में भी दिखाई देती है। एक शुद्ध सत्तात्मक पदार्थ की प्राप्ति के लिए अनेकता को मिटाना पड़ता है। जब तक पदार्थ में अनेक वस्तुएँ रहेंगी तब तक वे एक-दूसरे को सीमित करेंगी। पदार्थ में यदि

चित (Consciousness) गुण का आरोपण तो उससे अचित (Matter) का बहिष्कार हो जाता है। अतः किसी ससीम गुण के आरोपण से ससीम गुण का निषेध हो जाता है। पूर्ण शुद्ध पदार्थ में निषेध का प्रश्न ही नहीं उठता है। इसी बात को अभिव्यक्त करते हुए स्पिनोजा ने कहा है कि "प्रत्येक गुणारोपण एक निषेध है" (Every particular determination is negation)।

ज्यामिति में शाश्वत अमूर्त सत्यों का अध्ययन होता है। उन सत्यों में किसी प्रकार का परिवर्तन संभव नहीं है। एक त्रिभुज की आकृति जैसी है वैसी ही रहती है। उसके त्रिभुज भी नित्य हैं। इसी प्रकार स्पिनोजा का पदार्थ भी परिवर्तनशून्य, सदा एक समान बना रहने वाला है।

ज्यामिति में गति नहीं है। इस कारण उसकी कोई लक्ष्य योजना भी नहीं है। स्पिनोजा का पदार्थ भी लक्ष्यहीन है। लक्ष्य किसी वस्तु की प्राप्ति की ओर संकेत करता है। वस्तु-प्राप्ति अभाव को बतलाती है। पदार्थ पूर्ण है अतः पदार्थ में किसी प्रकार का लक्ष्य नहीं होता। गति का अर्थ स्थान परिवर्तन है। ईश्वर सर्वव्यापी शुद्ध

सत्ता है। अतः स्थानांतर का प्रश्न ही नहीं उठता है।

ज्यामिति कार्य-कारण नियम को नहीं मानता है। कार्य कारण की अभिव्यक्ति है। अभिव्यक्ति गति है। ज्यामिति में गति-तत्व नहीं होता। ज्यामिति में तो एक आधारवाक्य होता है। उस आधारवाक्य से निष्कर्ष अनिवार्यतः निकलते हैं। इसके अतिरिक्त ~~कार्य-कारण~~ ज्यामिति के सत्य नित्य हैं। स्पिनोजा के दर्शन में भी पदार्थ न कार्य है, न कारण। वह स्वयंभू है। पदार्थ और ससीम वस्तुओं में कार्य-कारण संबंध की अपेक्षा होती है। जिस प्रकार सागर से लहरें निकलती हैं उसी प्रकार एक पदार्थ से अनेक वस्तुएँ निःसृत होती हैं। स्पिनोजा कार्य-कारण की अपेक्षा निगमन में विश्वास करते हैं। निगमन में इच्छा और इच्छा स्वातंत्र्य नहीं होते हैं। इच्छा और इच्छा-स्वातंत्र्य व्यक्तित्व के सूचक हैं। ज्यामिति निर्वैयक्तिक विज्ञान है। स्पिनोजा भी पदार्थ को व्यक्तित्वशून्य मानते हैं। ज्यामिति में कुछ परिभाषाएँ, सिद्धान्त और मान्यताएँ स्वीकार कर ली जाती हैं फिर उन्हें सिद्ध किया जाता है। यही बात स्पिनोजा के दर्शन में भी

परिलक्षित होती है। स्पिनोजा पदार्थ, गुण, विकार आदि की परिभाषाएँ पहले दे देते हैं फिर उनकी व्याख्या करते हैं। परिभाषा में जो बात दिपी रहती है, व्याख्या में उसे स्पष्ट कर दिया जाता है। इस प्रकार स्पिनोजा के दर्शन में ज्यामिति का विधि का पूरा प्रभाव दिखाई देता है। उन्होंने अपने दर्शन को ज्यामिति ही बना दिया है।

स्पिनोजा की ज्यामिति विधि में कई दोष हैं। यहाँ मानवीय भावनाओं की उपेक्षा की गयी है। जीवन रेखाओं की भाँति सीधा नहीं है और न बिंदु की भाँति गोल है। मूर्त जीवन की व्याख्या में अमूर्त ज्यामिति विधि असमर्थ है। ज्यामिति व्यक्ति की अपेक्षा सामान्य पर जोर देता है परन्तु दर्शन व्यक्ति की उपेक्षा नहीं कर सकता। दर्शन ज्यामिति से अधिक व्यापक है। ज्यामिति विधि के आधार पर व्यक्ति - स्वातंत्र्य, जीवन, जगत एवं मनुष्य के साथ न्याय नहीं किया जा सकता है।